जुलाई-सितम्बर 2016
द्विमासिक पत्रिका
सत्यापित क्र. HAR HIN 04496/07/1/2007-T.C.

वर्ष-10 अंक-2
1 सितम्बर 2016

सेवा दर्शन
से प्रभु पूजा

परामर्शदाता : प्रान्त सेवाप्रमुख :
श्री कृष्णकुमार संघकार्यालय, दूरभाष केन्द्र के सामने, सोनीपत। मो. 089508-11405

स्वामी : सेवा भारती (पंजी.), हरियाणा।
अध्यक्ष : प्रो. डॉ. बुद्ध सिंह
सी-7, अशोक विहार, फेज़ 2, गुड़गांव-122001 & 099718-02274

सम्पादक एवं प्रकाशक : ओम प्रकाश अत्रेजा
ई-230, अर्जुन गेट, करनाल-132001
& 0184-2255852, 2255874

पत्रिका प्रबन्धक :
ओम प्रकाश वर्मा, एम.ए.बी.एड.
1414/13, अर्बन एस्टेट, करनाल-132001

सेवा दर्शन से प्रभु पूजा का सम्पादन, लेखन व अन्य सब कार्य अवैतनिक हैं

2013 में 15 अगस्त के दिन आज़ादी ने स्वयं देश से क्या कहा था?
भारत की आज़ादी की आत्मभाषा – कविता में।

बेबस हूँ बिखरी हूँ, उलझी हूँ सत्ता के जालों में,
एक दिवस छोड़ बरस भर बन्द रहती हूँ तालों में।
बस केवल 15 अगस्त पर मुस्कराने की आदी हूँ,
लाल किले में चीख रही मैं भारत की आज़ादी हूँ।
जन्म हुआ था सैंतालीस में, बचपन मेरा बाँट दिया,
अपनों ने दायां बाजू ना'पाक' बनाकर काट दिया।
जब मेरा पोषण होना था, तब मुझको कंगाल किया,
मुझपर तलवार चलाकर अलग आधा बंगाल किया।
मुझको जीवन दान दिया था लाल बहादुर नाहर ने,
वर्ना मुझको मार दिया था जिन्ना और जवाहर ने।
मैंने अपना यौवन काटा था कांटों की सेजों पर,
और बहुत नीलाम हुई, मैं ताशकन्द की मेज़ों पर।
नरम सुपारी बनी रही मैं, कटती रही सरौतों से,
मेरी अस्मत खूब लुटी है शिमला के समझौतों से।
मुझको सौ-सौ बार डसा है, कायर दहशतगर्दों ने,
सदा झुकाई मेरी नज़रें, नई दिल्ली के नामर्दों ने।
मेरा नाता टूट चुका है, पायल कंगन रोली से,
छलनी पड़ा हुआ है सीना, नक्सलियों की गोली से।
तीन रंग की मेरी चुन्नरी, रोज़ जलाई जाती है,
चौराहों पर नंगा करके, आग लगाई जाती है।
मेरी चमड़ी तक बेची है, मेरे इन राजदुलारों ने,

मुझको ही अन्धा कर डाला, मेरे श्रवण कुमारों ने।
उजड़ चुकी हूँ बिना रंग के, फुगवा जैसी लगती हूँ,
भारत माँ तो ज़िन्दा है, पर मैं विधवा सी लगती हूँ।
मेरे सारे ज़ख्मों पर, ये नमक लगाने आते हैं,
लाल किले पर एक दिवस का, जश्न मनाने आते हैं।
जो मुझसे तुम लूट चुके हो, वो पाई-पाई कब दोगे?
मैं कब से बीमार पड़ी हूँ, मुझे दवाई कब दोगे?
सत्य, न्याय, ईमान-धरम का, पहले उचित प्रबन्ध करो, **(अन्तरताने से)**
तब तक ऐसे लाल किले का नाटक बिल्कुल बन्द करो। **-गौरव चौहान**

गांधी-नेहरू के नाम पर अब तक जो हुआ सो हो गया, सावधान! अब जनता जान चुकी है, जो लूट-खसूट मचाई थी, वह पाई-पाई का लेगी हिसाब, जो तुमने खाई मलाई थी। जनता पहचान चुकी है ऐसे नेताओं को जिन्हें अंग्रेज़ी हुकूमत ने, अंग्रेज़ी समाचार-पत्रों ने अंग्रेज़ों की जी हजूरी करते हुए लोकप्रिय बनाया था। बड़े-बड़े नेता कैसे अंग्रेज़ों की चमचागिरी करते थे, उनकी अंग्रेज़ी मेमों के साथ यारी रखते थे, उनके साथ हंसी-ठठा मख़ौल करते थे, जेलों में आराम से रहते थे। उन्हीं लोगों ने आज़ादी के बाद 60 वर्षों तक जनता को मूर्ख बनाकर राज किया। ऐसे नेताओं पर आधुनिक इतिहासकार शोध करके इन सच्चाईयों को उजागर करें, कि क्या ऐसे लोग वास्तव में स्वराज, सुराज या रामराज्य के लिए संघर्ष कर रहे थे, या फिर अंग्रेज़ों से सत्ता हथिया कर सत्ताधीश बनना चाहते थे। उन्हीं लोगों ने अंग्रेज़ों से सत्ता हस्तांतरण (देश विभाजन) के समय महात्मा गांधी जी से कोई सलाह-मशविरा करने तक की भी आवश्यकता नहीं समझी। तथाकथित उन्हीं धर्मनिर्पेक्षवादियों ने धर्म के नाम पर देश को बांटने का पाप किया। 15 अगस्त 1947 से पहले कई दिन तक तथा बाद में भी गाँधी जी दिल्ली में थे ही नहीं। इन तथाकथित अकलमन्द नेताओं ने सारे देश को यह गीत तो गवा ही दिया : **'दे दी हमें आज़ादी बिना खड़ग बिना ढाल, साबरमती के संत तूने कर दिया कमाल',** कितना बड़ा झूठ है? इस पर भी कमाल इन नेताओं ने किया, देश की जनता सरदार पटेल को प्रधानमंत्री चाहती थी, बन गए प्रधानमन्त्री पंडित जवाहर लाल नेहरू! (जो कहीं से भी पंडित नहीं थे न कर्म से न धर्म से) पिछले 69 वर्षों में से 60 वर्ष इसी ख़ानदान के पूत-सुपूतों ने राज किया। आज विश्व में सबसे अधिक ग़रीब, सबसे अधिक निरक्षर, सबसे अधिक कुपोषित बच्चे, सबसे अधिक बीमार, सबसे अधिक बेरोज़गार सबसे अधिक शोषित-बन्धुआ हमारे देश में हैं। शहीद रामप्रसाद बिस्मिल ने फांसी से पहले कहा था :

सौभाग्य से- **कभी वह दिन भी आयेगा जब अपना राज होगा,**
जब अपनी ही ज़मीन होगी और अपना आसमान होगा।

आज कहने को अपना राज है अपनी ज़मीन अपना आसमान भी है, परन्तु उन हज़ारों शहीदों और गांधी जी के सपनों का स्वराज नहीं आया। आओ! विचार करें, भारत में भारतीय संस्कृति के अनुकूल हमारे महान ऋषि-मुनियों की कल्पना की व्यवस्था स्थापित होगी तथा सभी प्रकार की विसंगतियों को हल करके अपने राष्ट्र का हर व्यक्ति बोलेगा-

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःख भाग्भवेत्।

• • •

राजपूती शान दा-ओ-ए उसूल सी, धर्म नइयों छडणा मरना कबूल सी।

सामने अकबर के जाने का ये इक दस्तूर था,
और ये दस्तूर सारे हिन्द में मशहूर था।
दोस्त हो दुश्मन हो कोई हो मगर दरबार में,
सिर झुकाए और फिर ताज़ीम दे सरकार में।
एलची प्रताप का हाज़िर हुआ इक राजपूत,
सामने अकबर के आया, था बहादुर मनचला,
वह निडर था और अपनी कौम का सपूत।
दरबार में आते ही झट अपनी पगड़ी ली उतार,
और फिर ताज़ीम दी अकबर को झुककर सात बार।
मुसकरा कर शहनशाह अकबर ने पूछा ओ राजपूत?
तूने इस दरबार में सिर झुकाने से भी पहले,
सिर और पगड़ी को यूँ कर दिया तकसीम क्यों?
बिना पगड़ी सिर झुकाया और फिर ताज़ीम क्यों?
उस वीर राजपूत ने यूं दिया जवाब-
मुझे यह मेरी पगड़ी दी हुई है शूर-वीर प्रताप की,
मेरा आका सिर्फ सिर झुकाता है खुदा के सामने,
फिर दी हुई ये पगड़ी जो है उसकी अमानत,
इसलिए फिर क्यों झुके तुझ (तुच्छ) आदमी के सामने।
आप कल्पना करें यह सुनकर अकबर ने क्या किया होगा?

यह कविता अधूरी है, जितनी याद थी लिख दी। जो बन्धु यह कविता पूरी लिख कर भेजेंगे, उनके नाम से यह कविता पुनः छाप देंगे। -सम्पादक

शुभ करमन ते कबहुं न टरों

माता गुजरी व श्रीगुरू तेगबहादुर की तपस्या से अकालपुरख प्रसन्न थे, इसलिए श्री गुरुतेगबहादुर जी के घर 22 दिसम्बर 1666 को पटना शहर में मेरा जन्म हुआ। श्रीगुरु तेगबहादुर उन दिनों ढाका में थे। अनंतर वह मुझे पंजाब में ले आए जहाँ दाईयों ने लाड प्यार से मेरा पालन-पोषण किया।

कीनी अनिक भांति तन रछा। दीनी भांति भांति की सिछा।।
जब हम धरम करम मो आए। देव लोक तब पिता सिधाए।।

पिता के संरक्षण में विविध प्रकार से मेरे शरीर की रक्षा हुई तदनुसार ही विविध प्रकार की मेरी शिक्षा दीक्षा की व्यवस्था हुई और जब हम धर्म-कर्म के योग्य हुए तभी मेरे पिताश्री स्वर्ग लोक चले गए।

राज साज हम पर जब आयो। जथा शक्त तब पंथ चलायो।।
भांति-भांति बन खेल शिकारा। मारे रीछ रोझ झंखारा।।

गुरू जी फरमाते हैं 'जब पंथ के दशम पातशाह का दायित्व मुझे मिल गया, यथाशक्ति मैंने (सिख) पंथ का प्रचार-प्रसार किया। साथ ही वनों में जाकर विविध प्रकार के शिकार के खेल खेले, नील गायों और बारह सिंगोंका शिकार किया। लखनौर साहिब में बालक गोविंद राय को पीर आरिफ दीन ने जब सजदा किया तो साथी मुरीदों और फ़कीरों ने आरिफ़ दीन से पूछा, 'तुम इस्लाम के पीर होकर हिंदू पीर के बेटे को सजदा क्यों कर रहे हो?' तवारीख खालसा के अनुसार तब आरिफ़ दीन ने सहजपूर्वक उत्तर दिया, 'तुम नहीं जानते कि यह कौन है? परंतु हम जानते हैं। जब मैं मराकबे में खुदा के दीदार करने के लिए जाता हूँ तब वहाँ कई पीर, पैगंबर, अवतार, सिद्ध ऋषि मुनि जो खुदा के दरबार में गर्दन झुकाकर सहमे खड़े रहते हैं, तब यह सभी की अर्ज़ खुदा के पास पहुँचाता है और उत्तर लाकर हमें देता है। इसे खुदा की पदवी मिली हुई है। यहाँ यह धर्म के सुधार और पाखंड समाप्त करवाकर खुदा की भक्ति दृढ़ करवाने आया है। इससे सभी पीरों, फ़कीरों, पैगंबरों, अवतारों का काम पड़ता है इसलिए मैं इसे सजदा कर रहा हूँ।' श्री गुरू गोबिंदसिंह जी का फ़रमान है : **देहि शिवा बर मोहि इहै। शुभ करमन ते कबहुं न टरो।**

ना डरो अर सों जब जाए लरो। निसचै कर अपनी जीत करो।

गुरुजी ने खालसा पंथ की स्थापना कर 'आपे गुर चेला' सिद्धांत की पुष्टि करते हुए कहा : ***खालसा मेरो रूप है खास, खालसे में हौं करो निवास।।***

गुरुजी ने इस संसार में आने के अपने उद्देश्य को 'बचित्र नाटक में यूँ बयान

किया है : **हम ऐह काज जगत मो आए। धरम हेत गुरुदेव पठाए।**
जहां-तहां तुम धर्म बिधारो। दुष्ट दोखियन पकरि पछारो।
याही काज धरा हम जनमं। समझ लेहु साधु सभ मनमं।
धर्म चलावन संत उबारन। दुष्ट सभन को मूल उपारन।

पूर्व जन्म में श्री गुरू गोबिंदसिंह जी ने दुष्ट दमन के रूप में तपस्या के लिए जिस स्थान को चुना, उसके दीदार करने की इच्छा गुरुजी के श्रद्धालुओं में प्रबल थी, लेकिन यह स्थान कहाँ है इसकी खबर किसी को नहीं थी। न तो इस बारे में किसी को जानकारी थी न ही किसी पुरातन ग्रंथ में इसका जिक्र ही था। खोजियों द्वारा 'बचित्र नाटक' के संकेतों के आधार पर आखिर बाबा सोहन सिंह ने 1936 में हेमकुण्ठ साहिब को खोज ही निकाला। यहाँ स्थित लोकपाल सरोवर का नाम 'दंडपुष्करिणी' है। यहाँ सुशोभित गुरुद्वारे के दर्शन व अमृत सरोवर में स्नान करके सब भव बाधा व शारीरिक थकान दूर हो जाती है। **-प्रस्तुति, सुखविंदर सिंह जौड़ा**

सच्चा मित्र धर्म

अपना सच्चा मित्र कौन है? अगर विचार करेंगे तो मनुष्य का सच्चा मित्र धर्म ही है। मनुष्य के पंचभौतिक शरीर छोड़ने पर उसका धन, भूमि में या तिजोरी में पड़ा रह जाता है। भवन खड़ा रह जाता है व पशु बंधे रह जाते हैं। प्यारी स्त्री शोक विह्वल भवन के दरवाज़े तक साथ देती है। परिवारीजन और मित्र श्मशान तक साथ देते हैं। परलोक मार्ग में मात्र धर्म ही साथ जाता है। नीतिशास्त्र कहता है कि परदेश में मनुष्य के लिए विद्या ही मित्र है। यानी उसके पास कोई अनुभव, कला आदि है तो लोग उसका आदर करेंगे। परिवार में आज्ञाकारिणी पत्नी मित्र है। रोग होने पर दवा मित्र का कार्य करती है। मरने वाले के लिए एकमात्र धर्म ही मित्र है। धर्म क्या है? धर्म का सार क्या है- 'जो आचरण आपके प्रतिकूल है, उसका अन्य के लिए प्रयोग न करें। दूसरों के साथ वही व्यवहार करें, जो स्वयं आप चाहते हों।' यदि आप चाहते हैं कि हमारी बहन-बेटी को कोई बुरी निगाह से न देखे, तो आपको भी अपनी निगाह पवित्र रखनी होगी। यदि आप दूसरे का झूठ बोलना पसंद नहीं करते तो आपको भी किसी के साथ झूठा व्यवहार नहीं करना चाहिए। जहां धर्म है, वहीं साथ में सच्चा सुख भी है। धार्मिक जीवन बिताने से आप सदा सुखी रहेंगे। कोई मनुष्य त्रिभुवन का स्वामी रहकर भी दुखी रह सकता है और दरिद्र से दरिद्र भी विश्व का सबसे सुखी प्राणी हो सकता है। भगवान श्रीकृष्ण एक कदम और भी आगे बढ़ गए हैं, उन्होंने कहा है कि जहाँ धर्म है, वहीं पर जय है। धर्म वह प्रणाली या संस्था है, जिसकी सर्वांगपूर्ण परिभाषा बन चुकी है

और जिसे 'सनातन धर्म' के नाम से पुकारा जाता है, न तो किसी समय विशेष में इसका जन्म हुआ और न किसी विशेष संस्थापक से ही इसका श्रीगणेश हुआ। यह पृथ्वीगत सीमाबंधन को नहीं मानता। जितने लोग संसार में पैदा हो चुके हैं और जो उत्पन्न होंगे, वे सब इसी के अंतर्गत हैं। इसके नियम से मनुष्य बच नहीं सकता। हमारा धर्म सनातन है, यह त्रिपथगामी है, हमारा धर्म त्रिकर्मरत है। मानव की सभी प्रधान वृत्तियों में जो तीन वृत्तियां, ऊर्ध्वगामिनी, ब्रह्मप्राप्ति से संबंधित और बलदायिनी हैं, वे हैं सत्य, प्रेम व शक्ति। इन्हीं के द्वारा मानव-जाति की क्रमानुसार उन्नति हो रही है। कहो वही, जो सच्चा हो। करो वही, जो अच्छा हो। बोलो, जो मीठा हो। सुनो, जो गीता हो। देखो, जो सत्यं शिवं सुंदरं हो। दिखाओ, जो दिव्य और भव्य हो। खाओ वही जो प्रभु का प्रसाद हो। पिओ वही, जिसमें अमृत का स्वाद हो। चाल वही चलो जिसमें सच्चरित्र हो और कार्य वही करो जो पवित्र हो। थोड़ा पढ़ो, चिंतन ज़्यादा करो। थोड़ा बोलो, सुनो ज़्यादा। कम बोलो, परन्तु काम का बोलो। जो नपा-तुला बोलता है, उसका बोल दुनिया हमेशा याद रखती है। हम अपने मिशन में केवल इस कारण से सफल नहीं हो पाते क्योंकि हमारे सपने तो बड़े-बड़े होते हैं किंतु उन सपनों को साकार करने के लिए न तो उचित समय देकर कठोर श्रम करते हैं, और न ही हममें सब्र होता है। यह नहीं वह को छोड़कर सबसे पहले सुविचारित अपने जीवन का स्पष्ट लक्ष्य तय करें। सफल जीवन के लिये एक जीवन-एक ध्येय (One life-One mission) का लक्ष्य लेकर अपनी सारी शक्तियों को एकत्र करके अपने एक ध्येय को प्राप्त करने में लगाने से सफलता आपके चरण चूमेगी। **-संकलित**

लघुकथा – अपने घर पर विद्यार्थियों की कापियाँ जांचते-जांचते अचानक आशा मैम की आँखों से आँसू छलकने लगे। सिस्कियों की आवाज़ सुनकर मोबाइल देखते हुए पति ने पूछा- "क्या हुआ आशा, रो क्यों रही हो?" पत्नी बोली- "आज ही सुबह फ़ोर्थ क्लास के बच्चों को 'मेरी सबसे बड़ी ख़्वाहिश' विषय पर कुछ पंक्तियाँ लिखने को दिया, एक बच्चे ने लिखा-"भगवान मुझे मोबाइल बना दो। मोबाइल बनने पर घर में मेरी खास जगह होगी। जब मैं बोलूँगा तो सभी ध्यान से सुनेंगे। पापा ऑफ़िस से आने पर चाहे जितने थके होंगे, पर मुझे अवश्य ही उठा लेंगे। मम्मी कभी तनाव में होंगी वे मेरे साथ ही रहेंगी। मेरे रहने पर भाई बहनों से लड़ाई नहीं होगी। यदि मैं कहीं एकान्त में भी रहूँगा, तब भी मेरी देखभल होती रहेगी।" यह सुनकर पति गम्भीर होकर बोले- कैसे माँ-बाप हैं, जो अपने बच्चों पर ध्यान नहीं देते?" आशा (पत्नी) आँसू भरी निगाहों से पति की ओर देखकर बोली-"जानते हो वह बच्चा कौन है? हमारा अपना बच्चा, प्रीतू!" **-डॉ. चम्पा श्रीवास्तव,** सम्पादक 'ज्ञान प्रभा'

मन की एकाग्रता को पाने के उपाय : 1. मन की स्थिरता या एकाग्रता के लिए शरीर की स्थिरता अनिवार्य है। शरीर से जैसे वस्त्र को निकालकर अलगकर देते हैं, वैसे ही मन से शरीर को पृथक् देखें। शरीर के थकान रहित, शान्त स्वस्थ होने की भावना करें।

2. फिर शरीर के नाड़ीतन्त्र पर ध्यान लगायें। सुषुम्ना के निचले छोर से लेकर ऊर्ध्वगमन करते हुए सहस्रसार चक्र तक ध्यान करें। इससे शरीर की प्राण ऊर्जा ऊर्ध्वगमन करने लगती है, जिसे कुछ लोग कुण्डलिनी जागरण का नाम देते हैं।
3. प्राणायाम मन की एकाग्रता का एक प्रधान साधन हैं। विधिवत् रूप से नियमित प्राणायाम का अभ्यास करें।
4. शरीर की कोशिकाओं में होने वाले सूक्ष्म प्रकम्पनों की अनुभूति करें। पैर से लेकर सिर तक ध्यानपूर्वक देखें। फिर ब्रह्मरन्ध्र में ध्यान लगाने पर सारे शरीर का स्पंदन एक साथ देखा जा सकता है। इस अभ्यास से शरीर की रोग प्रतिरोधक शक्ति बढ़ती है।
5. इससे अगले क्रम में शरीर के अन्दर अन्तःस्रावी और बहिस्रावी ग्रंथियों का भी अवलोकन करें। इन ग्रंथियों में रसायनों का निर्माण होता है। नाड़ीतन्त्र में उन रसायनों का प्रभाव देखा जाता है। इन रसायनों के बदलने से व्यक्ति का स्वभाव भी बदल जाता है। हृदयदेश में तथा आज्ञाचक्र में ध्यान केन्द्रित करने से रसायनों के स्राव बदल जाते हैं।
6. **रंगों का ध्यान** - मानसिक विचारों के भी अपने रंग होते हैं। जैसे सूरज की रष्मियों के सात रंग इन्द्रधनुष में देखे जाते हैं, वैसे ही मानसिक भावों के कृष्ण, नील, जामुनी, लाल, गुलाबी, शुक्ल और हरा रंग भेद होते हैं। शुभ भावों के रंग पृथक् होते हैं। अशुभ भावों के रंग पृथक् होते हैं। अपने-अपने रंगों के साथ मन के भाव व्यक्ति के समग्र व्यक्तित्व को प्रभावित करते हैं। उज्जवल व्यक्तित्व के निर्माण के अभिलाषी व्यक्ति को शुभ विचारों के शुक्ल रंग का ध्यान करना चाहिए। ओड्.कार के जाप के साथ भी शुक्ल रंग का ध्यान करें।
7. **क्लेशों से मुक्ति** - मानसिक भावों के साथ राग-द्वेष पैदा होते हैं वही क्लेशों का जन्म होता है। राग-द्वेष पैदा ही न हों इसके लिए आत्मा-परमात्मा का ध्यान करें। चेतन की भावना से राग-द्वेष पैदा नहीं होते।

8. **श्रद्धा** - व्यक्ति को अपनी श्रद्धा के अनुसार ही फल मिलता है ईश्वर की भक्ति श्रद्धापूर्वक ही करें। वेद शास्त्रों, ऋषिमुनियों और गुरुजनों के प्रति की गयी श्रद्धा व्यक्ति को उसके लक्ष्य तक पहुँचा देती है।
9. **आत्म-संयम** - आत्मा में परमेश्वर ने अद्‌भुत् शक्तियाँ रखी हैं, जनसामान्य उनसे अनभिज्ञ बना रहता है। शक्तियों का जागरण योगाङ्गों के अनुष्ठान से हो जाता है। शक्ति प्राप्त करके भी साधक मन की धाराओं में नहीं बहता। आत्म-संयम के द्वारा शक्तियों का सदुपयोग ही करता है। शक्तियों का सदुपयोग लक्ष्य-प्राप्ति के लिये ही होना चाहिए।
10. **आत्म-दर्शन** - आत्मा ही द्रष्टा, श्रोता, वक्ता, मन्ता और सभी भावों का साक्षी होता है। जब आत्मा स्वयं को भावों से अलग देखने लगता है तो वह उस अभ्यास से अपने आत्म-स्वरूप में अवस्थित हो जाता है। **'द्रष्टा शुद्धोऽपि प्रत्ययानुपश्यः।'** आत्मा अपने स्वरूप में शुद्ध होते हुए भी बुद्धि के ज्ञान का साक्षी मात्र होता है।
11. **असम्प्रज्ञात समाधि** - योगाङ्गों के अनुष्ठान से जब बुद्धि में सत्त्व गुण की प्रबलता हो जाती है तो वह राग-द्वेष से ऊपर उठ कर आनन्द की अनुभूति करने लगती है। उसमें स्थैर्य उत्पन्न होता है, जो आत्मा की कैवल्य प्राप्ति में सहायक बनता है। सम्प्रज्ञात समाधि की अवस्था में आत्मा अपने को मन, बुद्धि आदि से पृथक् देखने लगता है, किन्तु असम्प्रज्ञात् समाधि में अपने स्वरूप को पृथक् नहीं देखता, उसे सर्वत्र एक विभु परमपिता परमेश्वर के ही दर्शन होते हैं। उस अवस्था में दृष्टा और दृश्य का भेद भी समाप्त हो जाता है। उस अवस्था में द्वैत कुछ देखने या सुनने के लिये शेष नहीं रह जाता। जिस स्थिति में एकमात्र ब्रह्म रह जाये वहाँ भय, शोक, मोह कैसा ?
12. **मुक्तावस्था** - जब मन में कोई कामना शेष नहीं रहती, तब सभी राग-द्वेष, मोह, आदि क्लेश समाप्त हो जाते हैं। अन्तःकरण में ज्ञान का प्रकाश हो जाता है। सभी विषयों से पूर्णतया वैराग्य हो जाता है, उस अवस्था में योगी 'पुरुष जीवनमुक्त होकर जीने लगता है। प्रारब्ध अभी शेष है, उसके अनुसार जीवन की गाड़ी चल रही होती है, किन्तु अपने जीवन से दूसरों को कोई कष्ट न हो तथा दूसरे भी अपनी साधना में बाधक न बन सकें, इसीलिये योगी पुरुष घर परिवार से दूर एकान्त स्थान में जाकर रहने लगता है। प्रारब्ध समाप्ति पर वह आत्मा मुक्त अवस्था को प्राप्त होकर मुक्ति का आनन्द लेती है। यही योग मार्ग की अंतिम मंजिल है।

-साभार, परोपकारी

पर्यावरण संरक्षण के कुछ सरल उपाय

- बच्चे अपने स्कूल को साफ़-सुथरा एवं पॉलिथीन मुक्त रखें।
- कपड़े के थैले के उपयोग की आदत डालें। ● पानी बर्बाद न करें, दूसरों को भी न करने दें। ● सार्वजनिक नल यदि खुला हो तो बंद करें।
- घर में वर्षाजल संरक्षण संयंत्र लगवायें, जल संकट पर चर्चा करें।
- मग में पानी लेकर ब्रश करें, इसी प्रकार शेव करें।
- गिलास में पानी लेकर ऊपर से पीयें।
- डिस्पोज़ल गिलास, कटोरी, चम्मच, प्लेट आदि के उपयोग से बचें।
- अपने जन्म दिन पर एक पेड़ लगायें, उसे बड़ा करने की देखभाल करें।
- अपने घर का तथा पिकनिक स्थल पर कोई कचरा इधर-उधर न डालें।
- जहाँ तक हो सके अपने बाग़-बग़ीचों में शाम को पानी अवश्य दें।
- अपने हाथ से एक पेड़ और घर में तुलसी का पौधा अवश्य लगायें।
- हमेशा मौसमी फल-सब्ज़ियों का उपयोग करें।
- कहीं भी जाने से पहिले कम्प्यूटर आदि बंद कर दें।
- साईकिल का अधिक से अधिक उपयोग बढ़ायें।
- स्कूल में मोबाइल फोन न लायें, ग़लती से ले आयें तो स्विच-ऑफ़ रखें।
- कमरों से बाहर जाते समय लाइट व पंखे बंद कर दें।

भीतर से जगाएं सबको जगाने का भाव

विद्या और धन, दान से बढ़ते हैं। आपकी विद्या आपके पास ही पड़ी न रह जाए इसे आप आगे से आगे बढ़ाएं। प्राचीन भारत में गुरू-शिष्य परंपरा थी। ऋषि-मुनि गुरुजनों ने अपने शिष्यों को अपनी साधना से उसी राह पर बढ़ाया। यही स्थिति दान को लेकर रहती है। भारत भूमि पर आज भी उदारता से दान करने वाले लोगों की कमी नहीं है। जो लोग अस्पताल, स्कूल, कॉलेज आदि के साथ सराय और विश्रामालय बनाते हैं, उसका लाभ वे स्वयं नहीं उठाते, बल्कि इन सुविधाओं का लाभ अन्य लोगों को, सर्वहारा वर्ग को व ज़रूरतमंदों को होता है। विद्या और दान की प्रेरणा भी आगे से आगे चलती है। जो विद्वान हैं, जागे हुए लोग हैं वे इसका महत्त्व जानते हैं। इस जागरण बोध को व्यापक लोगों तक पहुंचाने का दायित्व भी उठाना होगा। विद्या और सभी तरह के दान की भावना ज्यादा से ज्यादा लोगों तक पहुँचे, यह हमारे समय की महती आवश्यकता है। हमारे देश में शिक्षा को ज्ञान से जोड़कर देखा गया है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद देश भर में शिक्षा और साक्षरता के अभियान चले और केरल देश का पहला संपूर्ण साक्षर राज्य घोषित हुआ। इस अभियान

में सभी की भागीदारी होनी चाहिए क्योंकि यह शिक्षा और ज्ञान के प्रचार-प्रसार का पावन यज्ञ है। इस रूप में यह हमारी प्राचीन गुरुकुल व्यवस्था व ऋषियों के कार्य का ही आधुनिक रूप है। ज्ञान सभी को जगाता है और जनजागरण का सर्वाधिक महत्त्व होता है। अतः सभी को अपने भीतर सबको जगाने का भाव पैदा करना चाहिए। तदनुसार जो प्रयत्न होंगे वे अंततः देश को आगे बढ़ाने के रूप में सामने आएंगे। **-चामुंडा स्वामी**

स्वराज का अधिकार

यह घटना उस समय की है, जब देश को स्वतंत्र कराने के लिए आंदोलन ज़ोर पकड़ रहा था। अनेक युवा अपना सर्वस्व समर्पण करने को तैयार थे। उधर अंग्रेज़ प्रथम विश्व युद्ध में फंस हुए थे। मुंबई के गवर्नर लार्ड विलिंग्डन ने इस जंग में भारतीयों की सहायता लेने के लिए युद्ध परिषद् का आयोजन किया। उसमें अनेक भारतीय नेताओं के साथ बाल गंगाधर तिलक को भी आमंत्रित थे। कई भारतीय नेताओं ने अंग्रेज़ों को आश्वासन दिया कि वे विश्वयुद्ध में अंग्रेज़ों को हर संभव सहयोग देंगे। अनेक नेताओं की बात सुनकर उन्हें पूरी आशा थी कि तिलक भी यही कहेंगे। उन्होंने उन्हें मंच पर आमंत्रित किया। जैसे ही तिलक मंच पर आए तो वे बोले, 'किसी भी बाहरी आक्रमण का प्रतिकार करने के लिए हम भारतीय सदैव सहयोग के लिए तत्पर रहेंगे, किंतु स्वराज और स्वदेश रक्षा के प्रश्न पर सरकार को स्पष्ट वचन देना होगा।' 'स्वराज' शब्द सुनते ही विलिंग्डन का चेहरा तमतमा उठा। वह अपने स्थान से उठे और बोले, 'यहाँ राजनीतिक चर्चा की अनुमति नहीं दी जा सकती। आप हमारी सहायता का आश्वासन दीजिए और बोलिए कि आप हमारे साथ हैं।' यह सुनकर तिलक बोले, 'गवर्नर साहब! **'स्वराज हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है',** यदि आप यह शब्द सुनने को तैयार नहीं, तो मुझ जैसा भारतीय यहाँ एक क्षण भी नहीं रुक सकता।' विलिंग्डन बोले, 'हर समय तुम्हारे दिमाग़ में स्वराज गूँजता रहता है?' तिलक बोले, 'यह तब तक गूँजता रहेगा जब तक पूर्ण स्वराज नहीं मिल जाता।' वहीं से स्वतन्त्रता सैनानियों के लिए 'स्वराज हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है' एक प्रसिद्ध नारा ही बन गया था।

"यथा अरः चन्दन भरिवाही, भारस्य वेत्ता नतु चन्दनस्य"

किसी गधे पर चन्दन लाद दिया जाये, तो भी वह बोझ का ही अनुभव करेगा। चन्दन की सुगन्ध का नहीं, उसी प्रकार शास्त्र-ज्ञान यदि आचरण में न उतरे, उसकी सुगन्ध जीवन में न आये तो वह भार ही है। जैसे बार-बार औषधियों का नाम लेने से रोग नहीं मिटता, वैसे ही शास्त्र कंठस्थ कर लेने से काम नहीं चलता, उसे जीवन में उतारने में ही सार्थकता है। **-चन्दु यादव**

कुरुक्षेत्र में वर्ष प्रतिपदा उत्सव

बाल घर गीता विद्यालय प्रांगण में युगाब्द 5118 के शुभ आगमन पर सेवा भारती, कुरुक्षेत्र ने 4 प्रकार की प्रतियोगिताओं का आयोजन किया।

1. सुलेख प्रतियोगिता में कुल 110 बच्चों ने भाग लिया, जिनमें से कक्षा अनुसार 13 बच्चों को उत्तम लेखन के लिए श्रीमान् वेदप्रकाश की अध्यक्षता में बनी समिति के द्वारा चुना गया, जिनकी सूची इस प्रकार है-

कक्षा-1	:	प्रथम-सुनील-श्रवण कुमार छोटा बाज़ार कक्षा-2
कक्षा-2	:	प्रथम-वन्दना सरस्वती बाल संस्कार केन्द्र दीदार नगर
कक्षा-3	:	प्रथम-प्रिंस यादव-सुन्दरपुर
कक्षा-4	:	प्रथम-काजल-सरस्वती बाल संस्कार मोहन नगर
कक्षा-5	:	प्रथम-संजना, कविता, सरस्वती बाल संस्कार केन्द्र
कक्षा-6	:	प्रथम-सलोनी रविन्द्रनाथ टैगोर केन्द्र
कक्षा-7	:	प्रथम-पुष्पेन्द्र बाल संस्कार केन्द्र मोहन नगर, प्रीति बाल संस्कार केन्द्र मोहन नगर
कक्षा-8	:	प्रथम-नितिन शर्मा-एकलव्य बाल संस्कार केन्द्र
कक्षा-9	:	प्रथम - सोनिया - श्रवण कुमार केन्द्र छोटा बाजार
कक्षा-10	:	1. दिशान्त - बाल संस्कार केन्द्र मोहन नगर 2. काजल - माता शबरी, परसुराम कालोनी

2. हस्त मेहन्दी सज्जा प्रतियोगिता, गायत्री - माता यशोदा, जोगिया बस्ती
3. रंगोली प्रतियोगिता
4. शिक्षिका गायन प्रतियोगिता, प्रथम सीमा शर्मा, कीर्तिनगर (गाँधी नगर)

श्रीमान् कृष्ण जी प्रांत सेवा प्रमुख ने नववर्ष के बारे में जानकारी दी। सभी विजेताओं को पुरस्कृत किया। फलाहार वितरण श्री वेद प्रकाश की ओर से किया गया। अग्रवाल शू पैलेस की ओर से तीस जोड़ी चप्पल बच्चों को वितरित किए गये। सर्वश्री जयदत जोशी, वेद प्रकाश, देवेन्द्र जी, धर्मपाल जी, श्रीमती सुदेश लाडवा, विजय कुमार, सन्त लाल, मनोज कुमार उपस्थित रहे।

12-4-2016 को पंजाब नेशनल बैंक कुरुक्षेत्र डिविज़न के द्वारा P.N.B. की प्रेरणा के अंतर्गत सेवा भारती को 2 सिलाई मशीनें स्टैंड सहित तथा 8 कुर्सियाँ प्रदान की गई। P.N.B. की ओर से श्री पी. एस. चौहान, D.G.M., A.K. गोयल A.D.G.M., श्री J.P. Saini Manager, श्री रमेश गुलाटी, अंजली, जनक दुलारी के अतिरिक्त अन्य अधिकारी बंधु उपस्थित थे। श्री P.S. चौहान D.G.M. P.N.B ने सेवा भारती की गतिविधियों में रुचिपूर्वक जानकारी प्राप्त की, तथा अपने उद्‌बोधन में सेवा भारती की प्रशंसा की। सेवा भारती की ओर से श्री प्रेमनाथ जी ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

समरस समाज से सबल समाज : 19 मई, 2016 को सेवा भारती कुरुक्षेत्र व जनसंचार एवम् मीडिया टेकनोलोजी K.U.K. विभाग द्वारा सीनेट हाल में एक गोष्ठी का आयोजन किया गया। जन संचार के विद्यार्थियों द्वारा उनके अध्यापकों कें निर्देशन में सेवा भारती कुरुक्षेत्र द्वारा वर्तमान में किये जा रहे समाज सेवा के कार्यों पर एक लघु फिल्म बनाई गई उसका विमोचन कुलपति प्रो॰ कैलाश चन्द्र शर्मा द्वारा किया गया। विषय- 'समरस समाज, सबल समाज' पर सेवा भारती के प्रदेशाध्यक्ष डॉ॰ बुध सिंह जी ने कहा, कि देश व समाज की तरक्की के लिए सभी लोगों को आशावादी सोच के साथ साँझे प्रयास करने होंगे। जन संचार एवं मीडिया संस्थान के निर्देशक प्रो. एस. एस. बूरा ने कहा आज समाज के परिवर्तन के दौर से गुज़र रहा है। सेवा भारती के संयोजक ने सेवा भारती की नगर की गतिविधियों के बारे में बताया। श्रीमान् कुलदीप चन्द्र गुप्ता ने सेवा भारती की ओर से संगोष्ठी के अतिथियों को सम्मानित किया। मंच संचालक डॉ॰ बंसीलाल ने किया। इस मौके पर मल्टी आर्ट कल्चर सैन्टर के महेश जोशी एडवाईज़र प्रोफेसर ओमप्रकाश अरोड़ा, डॉ॰ रामेन्द्र सिंह, डॉ॰ सी. सी. त्रिपाठी, डॉ॰ श्री कृष्ण शर्मा। युवा एवम् सांस्कृतिक कार्यक्रम के विभाग निदेशक डॉ॰ C.D.S. कौशल, प्रो॰ दिनेश राणा, सर्वश्री मदन मोहन छाबड़ा, दिगविजय राणा, विजय शाक्य, अर्चना शर्मा, राजेश सिंगला व सेवित बालक बड़ी संख्या में मौजूद रहे। विश्वविद्यालय के कुलपति श्री कैलाश चन्द्र शर्मा जी ने जनसंचार एवम् प्रौद्योगिकी संस्थान के छात्र मनीष कुमार व जसपाल द्वारा बनाई गई फिल्म के लिए सम्मानित किया गया। श्री कुलदीप जी ने डॉ॰ भीमराव अम्बेडकर के जीवन पर प्रकाश डाला। सेवा भारती के बच्चों को बताया कि संविधान बनाने में डॉ॰ अम्बेडकर की क्या भूमिका थी। उन्होंने गुरु गोबिन्द सिंह जी के बारे में बताया, वीर फतेह सिंह, ज़ोरावर सिंह के बलिदान के विषय में बताया। कैसे गुरु जी ने अलग-अलग जाति से पंज प्यारे बनाकर उनमें वीरता का भाव भरा। भगवान श्री रामचन्द्र के जीवन पर प्रकाश डाला। किस प्रकार भगवान राम जी ने अपने पिता की आज्ञा से 14 वर्ष बनवास का जीवन बिताया। किस प्रकार खेवट ने भगवान श्रीराम को नदी पार करवाई, श्रीराम ने खेवट को पैसे देने की कोशिश की, खेवट ने कहा मैंने आपको नदी पार कराई आप मुझे भवसागर पार करवा देंवे। शबरी माता की चर्चा की। किस प्रकार से माता शबरी ने बेर चखकर भगवान को खिलाए। भगवान शबरी का भाव देख कर भावुक हो गये और लक्ष्मण जी क्रोधित हो रहे थे।

09 अप्रैल 2016 को कुरुक्षेत्र में स्नेहित सरोवर की पूर्व दिशा में स्थित फ़ौजी कालोनी में एक महिला सिलाई केन्द्र का शुभ आरम्भ किया गया। श्री प्रेमनाथ जी संरक्षक, श्री संत लाल जी ज़िला अध्यक्ष, श्री मंजीत जी, श्री गौरव गुप्ता शुभचिन्तक, श्रीमती सुदेश अनेजा, श्री सुभाष जी तथा फौजी कालोनी के प्रधान बलदेव सिंह जी ने इस केन्द्र का शुभारम्भ किया। श्रीमती कमला ने अध्यापिका के रूप में अपनी सेवाएँ प्रस्तुत की। **-प्रेमनाथ अनेजा**

● ● ●

रावण ने रणभूमि में अन्तिम साँसें लेते हुए श्रीराम से कहा -

ओ राम! मैं तुमसे हर बात में श्रेष्ठ हूँ, जाति में मैं तुम से बड़ा, ब्राह्मण हूँ। मेरा कुटुम्ब, तुम्हारे कुटुम्ब से बड़ा है। तुम्हारा केवल महल स्वर्ण जड़ित है, परन्तु मेरी पूरी लंका ही स्वर्ण नगरी है, मैं बल और पराक्रम में भी तुमसे श्रेष्ठ हूँ। मेरा राज्य तुम्हारे राज्य से बड़ा है, ज्ञान और तपस्या में मैं तुम से श्रेष्ठ हूँ। मैं चारों वेदों का ज्ञाता हूं। इतनी श्रेष्ठताओं के होने पर भी रणभूमि में मैं तुम से परास्त हो गया। क्योंकि तुम्हारा भाई तुम्हारे साथ है और मेरा भाई विभीषण. ....??? बिना भाई के साथ के जब रावण परास्त हो सकता है, हम किस घमण्ड में हैं? सदा साथ रहिये सदा विजयी रहिये। सभी को कोशिश करनी चाहिए कि परिवार टूटे नहीं, समाज संगठित हो, देश सुरक्षित रहेगा।

प्राकृतिक चिकित्सा के चमत्कार

तीन महीने का टाईफ़ाईड एक दिन में ठीक : दिल्ली के एक व्यक्ति, उम्र करीब 50 वर्ष, इलाज के लिये आये। यह व्यक्ति पिछले ढाई-तीन माह से टाईफ़ाइड से पीड़ित थे। बुखार उतरता, फिर चढ़ जाता। भूख नहीं लगती, नींद नहीं आती थी। कमज़ोरी बढ़ती जा रही थी। कोई दवा असर नहीं कर रही थी।

डॉ. विट्ठल दास मोदी ने कहा, आप इतनी दूर दिल्ली से कार से आये थक गए होंगे, आराम कीजिये। हम एक मटके में पानी भरवा देते हैं, आधा-आधा घंटे में एक-एक ग्लास पानी पीते रहें, पेशाब आये तब जाते रहें। मरीज़ ने ऐसा ही किया। सुबह मैं और डॉ. विट्ठलदास मोदी मरीज़ों के राउण्ड पर गये। उस मरीज़ ने मुस्कुराते हुए नमस्कार किया और कहा डॉक्टर साहब! रात भर पेशाब करता रहा, दो तीन दस्त भी लगे, लेकिन बुखार एकदम उतर गया। मुझे बहुत ताज़गी लग रही है। मैंने देखा तीन महीने पुराना टाइफ़ाइड एक दिन की जल चिकित्सा से ही ठीक हो गया। **- डॉ॰ अमृत**

मैं हिन्दू हूँ

मैं हिन्दू हूँ, इसका प्रमाण!
मैं स्वयं मानता हूँ, कि मैं हिन्दू हूँ।
सबूत तो चाहिए,
हिन्दुस्थान मेरी मातृभूमि है,
मैं गऊ को माता मानता हूँ,
उसके लिए मैं अपना रक्त
बहाने को तैयार हूँ।
गायत्री का जाप करता हूँ,
गंगा में स्नान कर,
अपने को धन्य मानता हूँ।
अपने तीर्थ स्थलों का आदर करता हूँ,
धर्म ग्रन्थ-जिनका मूल वेद हैं,
में पूर्ण आस्था रखता हूँ,
अन्य धर्मों (मत-पन्थों) के प्रति,
'सर्वधर्म समभाव' समान आदर भाव,
इस पर जगत मुझे क्या कहता है,
इसकी नहीं मुझे परवाह।
न किसी की निन्दा, न किसी से नफ़रत,
यही है मेरी फ़ितरत।
पूर्ण विश्व मेरा परिवार,
'वसुधैव कुटुम्बकम'
न किसी से वैर, माँगू सबकी ख़ैर,
सर्वे भवन्तु सुखिनः
प्राणी मात्र के प्रति मेरा भाव
'आत्मवत् सर्वभूतेषू'
सभी हैं मेरे प्रेम-पात्र,
भगवान के स्वरूप की व्याख्या,
और उसकी प्राप्ति का सुगम मार्ग,
हिन्दूधर्म के सिवा अन्यत्र कहीं नहीं।
एक ही आकांक्षा-
जब तक भगवद् प्राप्ति न हो,
जन्म जन्मान्तर तक-हिन्दू ही बनूँ!
मेरे आदर्श राजा,
मर्यादा पुरुषोत्तम राम
तथा शेर शिवा जी।
आदर्श युवक-वीरवर अर्जुन,
जिसे विश्व मोहिनी रूपसी
उर्वशी भी डिगा न सकी।
मेरे आदर्श स्वयंसेवक - डॉ॰ हेडगेवार
मेरी कसौटी-मेरे धर्म शास्त्र,
और आत्मा की आवाज़।
बस! मैं हिन्दू हूँ,
मुझे गर्व है, कि मैं
अपने को हिन्दू मानता हूँ।

इन सब बातों को न मानते हुए भी कोई गर्व से कहे-कि मैं हिन्दू हूँ और 'भारत माता की जय' बोले तो वह भी सच्चा हिन्दू ही है। **- एक हिन्दू**

सेवा भारती, समालखा का तीज उत्सव

हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी सेवा बस्तियों में चल रहे प्रकल्पों पर बड़ी धूमधाम से मनाया गया। प्रकल्पों एवं स्कूल के बच्चों ने सांस्कृतिक एवं देशभक्ति गीत सुनाकर उपस्थित महानुभावों को मन्त्रमुग्ध कर दिया। नगर उपाध्यक्ष श्री सुरेन्द्र शर्मा ने हरियाली तीज के बारे में जानकारी दी। बच्चों को घेवर का प्रसाद वितरित किया गया। कार्यक्रम को सम्पन्न करवाने में कुरुक्षेत्र विभाग प्रमुख सर्वश्री दयालु अरोड़ा, सुभाष मलहोत्रा, मदनलाल, डॉ. देवेन्द्र मलहोत्रा, राजेन्द्र प्रसाद शर्मा का विशेष योगदान रहा। **-सुभाष देसवाल**

सेवा भारती, गोहाना

1. 31 जुलाई को देवी नगर, गोहाना में श्रीमान् कश्मीरी लाल जी के आशीर्वाद से एक नए बाल संस्कार केन्द्र का शुभारम्भ पंडित बृजेन्द्र शर्मा द्वारा हवन-यज्ञ से किया गया, जिसमें बतौर शिक्षिका मोनिका बहिन सेवाएँ देंगी। पच्चीस भैया-बहिनों को इसका लाभ मिलेगा। केन्द्र में गायत्री-महामन्त्र के जाप से अध्यक्ष के सम्बोधन के उपरान्त कल्याण-मंत्र से कार्यक्रम समाप्ति कर बूँदी का प्रसाद वितरण किया गया। सर्वश्री परमानंद लोहिया, मुकन्दी लाल गुप्ता, राम निवास गोयल, बलबीर सैणी, राजेश पांचाल, सुरेन्द्र नरवाल, विजय पाल, राम सिंह शास्त्री एवं सुरेन्द्र पांचाल उपस्थित रहे।

2. 16 जून को प्रान्त सिलाई प्रमुख श्री बिशनदयाल महेन्द्रगढ़ से गढ़ीसराय नामदारखां गाँव में चल रहे सिलाई प्रशिक्षण केन्द्र पर पहुँचे, जहाँ उन्होंने सिलाई मशीन के पुर्ज़े खोलकर उनके नाम और काम बताए। कार्यक्रम की अध्यक्षता सेवा भारती सोनीपत के ज़िलाध्यक्ष श्री परमानंद लोहिया ने की। सर्वश्री सुरेन्द्र पांचाल, राजेश पांचाल, बलवीर सिंह सैणी तथा राम सिंह खण्डेलवाल की टीम उपस्थित रही। प्रशिक्षु महिलाओं को सम्बोधित करते हुए श्री बिशन दयाल जी ने कहा कि छात्राओं को न केवल सिलाई आनी चाहिए बल्कि उन्हें मशीन के स्वरूप एवं कार्य प्रणाली का भी ज्ञान होना चाहिए ताकि आवश्यकता पड़ने पर वे आम मुरम्मत का भी काम कर सकें। कार्यक्रम में केन्द्र की शिक्षिका रानी और मुकेश देवी का विशेष सहयोग रहा।

3. मेंहदी प्रशिक्षण शिविर : गढ़ीसराय गोहाना के सिलाई केन्द्र में गीता विद्या मन्दिर की शिक्षिकाओं श्रीमती सारिका, महिमा मित्तल व ललिता बहिनों ने बहुत आत्मीयता से मेंहदी लगानी सिखाई, जिसमें दक्षता हासिल करने वाली बहिनें - नीतू, रमा, पूजा, सरिता, आशा रहीं। विशेष सहयोग सेवा भारती के नगर अध्यक्ष पं॰ घनश्याम दास एवं नगर सचिव सुरेन्द्र पांचाल का रहा।

4. अधिकार एवं कर्त्तव्य : सिलाई सैंटर गढ़ीसराय नामदारखां में रविवार 26.05.2016 को एक गोष्ठी का आयोजन हुआ, जिसमें व्योवृद्ध एडवोकेट श्री इन्द्र सिंह मनवाला व बहिन ज्योति पांचाल एडवोकेट के संग श्री सत्यवान लांग्याण ने बहिनों को जीवन में आने वाली मुश्किलों से अवगत कराते हुए उन्हें कानूनी सहायता से अवगत कराया। श्री इन्द्र सिंह जी मनवाला ने बताया कि केवल छः घण्टे की नींद के उपरान्त जो जिस काम में जुड़ी है, शेष समय उसी काम में समर्पण करें। कठिन परिश्रम सफलता का साधन है। श्री

सत्यवान लांग्याण ने कहा कि बहिनो जागो, सोने का समय नहीं रहा, अबला कहना नारी का अपमान है, वह सबला है, सभी मुकामों पर पहुँचने वाली नारी अबला हो ही नहीं सकती। दबी कुचली नारी को समय मिला है जागने का, मुझे खुशी है कि नारी हर क्षेत्र में पुरुषों को पछाड़ रही है। संयोजक सुरेन्द्र पांचाल, विजयपाल का विशेष योगदान रहा। **-सुरेन्द्र पांचाल**

असली विकलांग कौन?

बस, यात्रियों से खचाखच भरी थी, एक पुरुष औरत और उसकी गोदी में करीब एक साल का छोटा बच्चा बामुश्किल चढ़ पाए थे, बस में वे तीनों.... .. भीड़ की धक्कमपेल में बस के बीच तक आ गये थे, बस चल चुकी थी। जब भी बस के ब्रेक लगते वह महिला उस बच्चे को सम्भालते सम्भालते खुद गिरने को हो जाती। मैं खड़े-खड़े यह सब कुछ देख रहा था आखिरकार जब मुझसे रहा ना गया तो महिला सीट पर बैठे कॉलेज टाइप के उन दो मुस्टंडों से मैंने कहा, 'भाइयो! तुम में से एक खड़ा हो लो और इस औरत को बैठने दो, इसकी गोदी में बच्चा है, यह परेशान है। क्यों, हम क्यों खड़े हों? जहाँ से बस चली थी वहीं से बैठे हैं, कोई और खड़ा हो जाए, हम क्यों खड़े हों? एक दो अन्य यात्रियों ने भी उनसे कहा लेकिन नतीजा सिफ़र। लो बहन! तुम यहाँ बैठ जाओ.... एक विकलांग ने बैसाखियों के सहारे उठते हुए। उस औरत ने बहुत मना किया कि भाई! तुम विकलांग हो कैसे खड़े हो पाओगे? लेकिन उसने हाथ पकड़ कर उसको अपनी सीट पर बिठा दिया और खुद बैसाखियों के सहारे खड़ा हो गया। मेरा मन उस विकलांग युवक के प्रति श्रद्धा से भर गया। हाथ स्वतः जुड़कर तालियों में परिवर्तित हो गए। पूरी बस में तालियों की गड़गड़ाहट गूँज उठी जो शायद उस विकलांग युवक को उसकी सुहृदयता का पुरस्कार थी। उन दोनों मुस्टंडों की शक्ल देखने लायक थी। बस अपने गंतव्य की ओर बढ़ रही थी और मैं खड़े-खड़े यही सोच रहा था, कि कुछ लोग तन से स्वस्थ होते हैं लेकिन मन से विकलांग होते हैं और कुछ लोग मन से स्वस्थ होते हैं, आखिर इनमें से असली विकलांग कौन है?

अंध प्रेम से बच्चे बिगड़ रहे हैं : श्रीकृष्ण ने एक रात को स्वप्न में देखा कि एक गाय अपने नवजात बछड़े को प्रेम से चाट रही है। चाटते-चाटते वह गाय उस बछड़े की कोमल खाल को छील देती है। उसके शरीर से रक्त निकलने लगता है। थोड़ी देर में वह बेहोश होकर नीचे गिर पड़ता है। श्रीकृष्ण ने प्रातः यह स्वप्न भगवान श्री नेमिनाथ को बताया। भगवान कहते हैं, कि यह स्वप्न

पंचमकाल (कलियुग) का लक्षण है। कलियुग में माता-पिता अपनी संतान को इतना प्रेम करेंगे, उन्हें सुख सुविधाओं का इतना व्यसनी बना देंगे कि वे उनमें डूबकर अपनी ही हानि कर बैठेंगे। सुविधा भोगी और कुमार्गगामी बनकर विभिन्न अज्ञानताओं में फंसकर अपने होश गँवा देंगे। आजकल हो भी यही रहा है, आमतौर पर घर में बच्चे होतें हैं एक या दो बस, माता-पिता बच्चों को अंध ा प्रेम के भ्रम में मोबाइल, बाइक, कार, अजब-अजब कपड़ों के पहनावे, फ़ैशन की सामग्री और खुले हाथ पैसे उपलब्ध करा देते हैं। बच्चों का चिन्तन इतना विषाक्त हो जाता है, कि वो माता-पिता से झूठ बोलना, बातें छिपाना, बड़ों का अपमान करना आदि सीख जाते हैं। याद रखिए - अच्छे संस्कार के बिना सुविध ाएँ पतन का कारण होती हैं। **-कृष्ण कुमार,** प्रान्त सेवा प्रमुख

आपकी पाती : गुरुग्राम निवासी 82 वर्षीय श्री ए.डी. मुंजाल सच्चे देशभक्त, अपने हिन्दू राष्ट्र पर सब कुछ न्यौछावर कर देने के लिए हर समय तत्पर रहने वाले इस युग के आधुनिक महापुरुष, समय-समय पर मुझे भी बहुत प्रेरणादायक साहित्य भेजते रहते हैं। उन्होंने किसी व्यक्ति से पत्र लिखवाकर भेजा है, उसे मैं वैसा का वैसा छाप रहा हूं। **-सम्पादक**

माननीय श्री अत्रेजा जी, सादर प्रणाम्

पूज्य मुंजाल जी अक्सर आप का ज़िक्र किया करते हैं। उनकी आयु 82 वर्ष है। एक आँख उनकी Dead है, शरीर में अनेक रोग लगे हैं, परन्तु प्रभु की कृपा से चलते फिरते हैं। वह आप को Lion on Two Legs of Emergency बोलते हैं। उन्होंने मुझसे बोला, कि आप को प्रार्थना करूँ कि 'आपातूकाल में एक स्वयंसेवक का संघर्ष', पुस्तक रूप में छापें। यदि छाप चुके हैं, तो उसकी एक प्रति भेजने की कृपा करें। एक प्रति 'तानाशाही से जूझता हरियाणा' भी भेजने का कष्ट करें। कीमत भी लिख भेजें। भारत में डाक विभाग में तो अब भी पुराने किसम का ही राज चल रहा है। डाकखाने से चलते ही रास्ते में डाक ग़ायब हो जाती है, इसलिए उपरोक्त पुस्तकें By Regd. Book Post भेजें। दोनों का शुल्क और डाक खर्च लिख भेजें, साथ में अपना A/c No., Bank का नाम तथा सेवा दर्शन का A/c No. भी भेजें, ताकि कुछ सेवा वह भेज सकें। धन्यवाद!

पुनश्च श्री मुंजाल जी Self appointed प्रचारक करीब 40 साल रहे। हज़ारों हिन्दू, संस्थाओं, आश्रमों, स्त्री रक्षा मण्डलियों, धर्म जागरण, RSS, आर्य समाज, बड़े-2 मन्दिरों को भिन्न-2 जागरण साहित्य, पत्रक भेजते रहते हैं।

आमदनी एक रुपया नहीं, ना ही कहीं से एक रुपये का सहयोग मिला, यह सब अपनी Salary तथा Pension से सेवा चलती है। अनेक हिन्दू युवतियों को ध र्मान्तरण के जाल से बचाया। बहुत से कार्य Under Ground रह कर करते रहे। उन्होंने इस Project में 3300 पुस्तकें जो (एक Rs. 40/- की है) Photo Copies By Post पूरे भारत में भिन्न-2 संस्थाओं को भेजी, साथ में 13-14 पत्रक का Set भी। हिन्दू समाज की उदासीनता के कारण बड़ी निराशा में रहते हैं। सोचते हैं क्या होगा इस समाज का? संघ के हज़ारों जवानों ने (आप जैसे) अपनी जवानियाँ गला दीं, परन्तु इस कौम को जगा न सके। **(निश्चिन्त रहें, हिन्दूराष्ट्र अमर राष्ट्र है, इसका कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता।)**

सेवा भारती टोहाना

15.7.2016 को इन्दिरा बस्ती टोहाना में सिलाई केन्द्र का शुभारम्भ किया गया। वेद मंत्रों की ध्वनियों में हवन-यज्ञ की पवित्र अग्नि के सम्मुख स्थापना की गई। सेवा भारती टोहाना के अध्यक्ष श्री हंसराज जी नागपाल की अध्यक्षता में यह समारोह आयोजित किया गया। बस्ती निवासी श्री अमरीक सिंह अपनी धर्मपत्नी के साथ यजमान के रूप में उपस्थित थे। उनके निवास स्थान पर यह प्रकल्प काम करेगा। श्रीमती गीता देवी, इस वार्ड की नगर परिषद् सदस्य तथा पार्षद् पति श्री रणजीत सिंह समारोह में उपस्थित थे। बस्ती के गणमान्य व्यक्ति काफी संख्या में उपस्थित थे। इसके अतिरिक्त सेवा भारती के सर्वश्री प्रेम प्रकाश जी शास्त्री, मनफूल जी शर्मा, कश्मीरी लाल रहलन, सतप्रकाश जी शर्मा, बाल किशन जी भाटिया (पूर्व न॰ प॰ प्रधान) एवं डॉ॰ हरीश यादव प्राकृतिक चिकित्सक तथा अनेक भाई बहन उपस्थित थे। अन्त में शान्ति पाठ के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। **-राय चन्द जैन**

सेवा भारती, रेवाड़ी

26 जुलाई, 2016 को श्री श्याम बाबा निःशुल्क विद्यालय, रेवाड़ी में शिक्षा ग्रहण कर रहे 37 विद्यार्थियों को स्कूल ड्रैस वितरण का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम सेवा भारती रेवाड़ी ज़िले के अध्यक्ष श्री नरेंद्र कुमार की अध यक्षता में सम्पन्न हुआ। ड्रैस का वितरण श्री हरिराम सैनी जी द्वारा किया गया। कार्यक्रम में अनेक गणमान्य बन्धु उपस्थित रहे। मुख्यवक्ता राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ रेवाड़ी के सहज़िला कार्यवाह श्री सुभाष जी ने बताया, कि बच्चे देश का भविष्य हैं, देश के नेतृत्व की बागडोर आज के विद्यार्थियों के हाथ में आने वाली है, इसलिए जैसा हम देशका भविष्य चाहते हैं वैसा निर्माण

अपने विद्यार्थियों का करना होगा। इसमें विद्यार्थियों के अभिभावक व अध्यापकों की विशेष भूमिका होगी। सेवा भारती के अध्यक्ष नरेन्द्र कुमार जी ने विद्यालय में निःशुल्क सिलाई केन्द्र चलाने की घोषणा की। श्री हरीराम सैनी ने बच्चों को बताया कि प्रातः जल्दी उठकर अपने हाथों की हथेली को देखकर इस मन्त्र के साथ कराग्रे भगवान का स्मरण करना तथा धरती माता को स्पर्श कर प्रणाम करना चाहिए। कार्यक्रम में ज़िला प्रचारक सर्वश्री संजय जी, सूरज जी कोषाध्यक्ष, प्रेम जी सचिव, वैद्य रति राम, सुरेश हुड्डा, महिपाल सैनी, शिव कुमार फ़ोटोग्राफ़र, सहित अनेक लोग उपस्थित रहे। अंत में ड्रैस व प्रसाद वितरण करके कार्यक्रम का समापन किया गया। **- नरेन्द्र कुमार**

सेवा भारती, गोहाना

गुरु पूर्णिमा के अवसर पर गीता विद्या मन्दिर, गाँधी नगर बाल संस्कार केन्द्र पर सोनीपत ज़िला के अध्यक्ष श्री परमानन्द जी लोहिया ने गुरू की महिमा के बारे में बच्चों को बताया, कि छत्रपति शिवाजी ने अपना सारा राजपाट समर्थ गुरू रामदास जी को गुरू दक्षिणा में दे दिया था। गुरू श्री रामदास जी ने शिवा जी को आज्ञा दी कि एक अच्छे शिष्य की भाँति इस राजपाट के द्वारा समाज की सेवा करो। कार्यक्रम में स्वामी अमृतानन्द जी ज़िला सचिव की विशेष उपस्थिति रही। उन्होंने बच्चों को हिन्दी तथा गणित विषय पढ़ाया, जिसमें बच्चों ने काफी उत्सुकता दिखाई। कार्यक्रम में गोहाना सेवा भारती के सचिव श्री सुरेंद्र जी पांचाल तथा गीता विद्या मंदिर के आचार्य अनिल जी, श्रीमती सुदेश जी एवं बाल संस्कार केंद्र की आचार्या कविता जी भी सम्मिलित हुए। बच्चों ने देशभक्ति गीत गाकर कार्यक्रम को रोमांचक बना दिया। कार्यक्रम के अंत में सभी को प्रसाद वितरित किया गया।-**प्रचार प्रमुख**

सेवा भारती, ऐलनाबाद

15 जुलाई, 2016 को रानी लक्ष्मीबाई महिला सिलाई केन्द्र का वार्ड नं॰ 4 में शुभारमभ किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत गायत्री-मन्त्र से की गई। संत रविदास व स्वामी विवेकानंद बाल संस्कार केन्द्र के बच्चों ने स्वागत गीत गाकर आए हुए मेहमानों का स्वागत किया। उसके बाद देश भक्ति के गीत भी सुनाए। सिलाई केन्द्र की लड़कियों ने भी गीत व चुटकुले सुनाए। डॉ॰ विजय कुमार सिंगला मुख्य अतिथि व श्रीमती ईशा सिंगला विशिष्ठ अतिथि थे। मंच संचालन, सेवा भारती के सचिव श्री नरेन्द्र कुमार सपरा ने किया। मुख्य अतिथि डॉ॰ विजय कुमार सिंगला ने केन्द्र को दो सिलाई मशीनें

भेंट की। संस्था के जिन बच्चों ने गीत सुनाए उन्हें कापी-पैंसिल देकर सम्मानित किया। सभी बच्चों को बूँदी का प्रसाद बाँटा। उसके बाद शान्ति पाठ करके कार्यक्रम को समाप्त किया। सर्वश्री चानन मल तलवाड़िया, डॉ॰ सुरेन्द्र गुप्ता, के॰सी॰ छापोला, मनी राम गुप्ता, राम लाल मैहता, नरेन्द्र सपरा, कन्हैया लाल उपस्थित रहे। वीरेन्द्र सिंह कथूरिया ने आए सभी मेहमानों का धन्यवाद किया।

-वीरेन्द्र सिंह कथूरिया, प्रचार प्रमुख

सेवा भारती, फ़तेहाबाद

प्रथम आये छात्र-छात्राओं को किया सम्मानित : 18 जुलाई को श्री तीर्थ राम शर्मा बाल संस्कार केन्द्र हंस कालोनी में श्री तीर्थ राम शर्मा जी की बरसी के उपलक्ष्य में सम्मान समारोह किया गया, जिसमें बतौर मुख्य अतिथि ज़िला तहसीलदार श्रीमती नवजीत कौर व सेवा भारती के प्रांत संगठन मन्त्री श्री जितेन्द्र जी पहुँचे। इस अवसर पर ज़िला फ़तेहाबाद के सरकारी स्कूलों में प्रथम आये छात्र-छात्राओं को मुख्य अतिथि व शहर के गणमान्य लोगों द्वारा सम्मानित करके बच्चों का मनोबल बढ़ाया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ॰ वीरेन्द्र सिवाच ने की, विशिष्ट अतिथि के तौर पर श्रीमती सुनीता रति नगर परिषद् चेयरमैन व नेहा मित्तल समाज सेविका एम.सी. फ़तेहाबाद उपस्थित रहे। सेवा भारती से प्रान्त सिलाई प्रमुख सर्वश्री विशन दयाल वर्मा, हज़ारी लाल नरूला समाज सेवी, भाजपा के युवा नेता सुनील मैहता, सरपंच मताना संजय रुखाया, दीपक रुखाया, परमजीत शर्मा सुपुत्र स्व. श्री तीर्थ राम जी, महेन्द्र मुटरेजा, वीरेन्द्र नारंग, श्रीमती नीलम नारंग ने कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। मुख्य अतिथि श्रीमती नवजीत कौर ने कहा कि सेवा भारती का कार्य बहुत ही काबिले तारीफ़ है। ऐसे कार्य समाज को बहुत ही मज़बूत बनाने के लिए सेवा भारती छोटे-छोटे असहाय बच्चों को फ्री में शिक्षा देकर महानता का कार्य कर रही है। उन्होंने बच्चों से कहा कि आप भी पढ़ लिखकर ऑफ़िसर बनें व धन कमाकर अपने जैसे ग़रीब बच्चों की सहायता करें ताकि एक ऐसी कड़ी मज़बूत हो जिससे ग़रीब बच्चों के भविष्य को मज़बूत किया जाये। संगठन मन्त्री जितेन्द्र ने कहा कि मानव जीवन में सेवा ही सबसे बड़ा धर्म है। मानव जीवन में मनुष्य के मुख्य रूप से दो ही कार्य हैं- एक नर से नारायण बनना और दूसरा लोगों की सेवा करना। सेवा का मार्ग कठिन तो है परन्तु जो शान्ति व शक्ति सेवा करने से मिलती है, वह किसी अन्य कार्य से नहीं मिलती, सेवा करने वाला हमेशा प्रभु का प्यारा होता है। आओ हम सब

मिलकर सेवा भारती को मज़बूत बनाएँ व सेवा करके भगवान द्वारा दिये गये सेवा रस का पान करें। प्रमुख रूप से श्री हीरालाल गुप्ता ज़िला संरक्षक ने मुख्य अतिथि व शहर के सभी गणमान्य लोगों का अभिनन्दन व धन्यवाद किया। विभाग अध्यक्ष सर्वश्री विश्वानाथ मुंजाल, संरक्षक भागचन्द तनेजा, ज़िला प्रधान अशोक धमीजा, ज़िला सचिव रामपाल खेतरपाल, जगदीश नायक, मदन गोपाल नारंग कोषाध्यक्ष, सुभाष भ्याणा, स्कूल प्रिंसिपल श्रीमती मधु बाला जी, रमेश भ्याना, देवी दयाल चोपड़ा, प्रमोद कुमार, नीलम रानी उपस्थित थे। आये हुए गणमान्य लोगों को स्मृति चिह्न व सेवा भारती की पुस्तकें देकर सम्मानित किया गया। मंच संचालन श्री सीता राम जी चौहान ने किया। - **अशोक कुमार धमीजा**

सेवा भारती, सिरसा

29 जुलाई को कमालिया भवन सिरसा के सभागार में धर्म जागरण विभाग एवं लायन्स क्लब सिरसा सैंट्रल के सहयोग से स्व॰ श्री नन्दलाल चावला की मधुर स्मृति में, चावला जी के परिवार के सौजन्य से, जे. जे. कालोनी सिरसा की सेवा बस्ती में लगभग 50 परिवारों को फल चित्र व राशन वितरण किया गया। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सहप्रान्त प्रचारक श्री विजय जी के मार्गदर्शन में यह कार्यक्रम सम्पन्न किया गया।

मोहन्ता गार्डन में स्थित कार्यालय के प्रांगण में गली लछमन गुजर वाली, थेड़ मोहल्ला, रानियां रोड पर चलाये जा रहे सिलाई व बाल संस्कार केन्द्रों की बालक-बालिकाओं व बच्चों के अभिभावकों ने 18 अगस्त को रक्षा बंधन कार्यक्रम बड़ी धूमधाम से मनाया। गायत्री-मंत्र पाठ के साथ 6 केन्द्रों के बालक-बालिकाओं व बहनों ने मिलकर मधुर गीत सुनाकर सभी का मन मोह लिया। ज़िला संघचालक मा. डॉ. सुरेन्द्र मलहोत्रा जी ने रक्षाबंधन के महत्त्व पर प्रकाश डाला। बाद में सभी ने मिलकर एक-दूसरे को रक्षा सूत्र बांधे। कार्यक्रम में ज़िला संरक्षक श्री ख़ज़ान चंद गोयल, ज़िलाध्यक्ष श्री धर्मपाल धवन, उपाध्यक्ष श्री कृष्णचन्द्र भटनागर, श्री सोहनलाल मक्कड़, श्री वेद सरदाना, श्री सुदेश अग्रवाल, श्री अमर सिंह गोदारा, महावीर सिंघल व केन्द्र की अध्यापिकाएं सिमरन, कान्ता यादव, मन्जू, प्रवेश व आरती इत्यादि उपस्थित रहे। अन्त में प्रसाद वितरण के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

-बिहारीलाल बंसल

सेवा के लिए फ़कीरों की फ़ौज चाहिए

विश्व इतिहास में समृद्ध, शक्तिशाली, ज्ञानवान, तपस्वी तो असंख्य हुए हैं, पर इतिहास के पृष्ठों पर स्वर्णाक्षरों में नाम उन्हीं विरलों का अंकित होता है, जिन्होंने अपने जीवन में अर्जित धन-सम्पदा, अपनी ज्ञान-विज्ञान की शक्तियाँ, मानवता की उन्नति व विकास के लिए अर्पित कर दीं। मानवता के इतिहास में त्याग और बलिदान का श्रेष्ठतम उदाहरण महर्षि दधीचि का है। आज के इस अंधेरे समय में, जब आस्था और विश्वास के दीये साधारण हवा के झोंकों से डगमगा जाते हों, महर्षि दधीचि के बलिदान की गाथा सभी के लिए अटूट ज्योति की किरण के समान है। हज़ारों वर्ष पूर्व इस धरती पर अवतरित महर्षि दधीचि ने अपनी तपस्या और ज्ञान-विज्ञान से अर्जित शक्तियों से सम्पन्न अपने शरीर की अस्थियों का विश्व कल्याण के लिए जीते जी दान कर दिया। श्रीराम ने पूरा जीवन समाज कल्याण के लिए सभी प्रकार के संघर्षों कठिनाईयों, कष्टों और विपत्तियों में बिता दिया। आज समाज उन्हें भगवान के रूप में पूजता है। योगीराज श्रीकृष्ण ने हर प्रकार के छल-कपट और फरेबों के आरोप मानव समाज की सुख सुविधा के लिए सहन किए। उन्होंने कई बार कहा, कि वह समाज की सुख-सुविधा के लिए घोर नरक की यातनाओं को भी झेलने के लिए तैयार हैं। अपने भक्तों की एक पुकार पर वह दौड़े चले आते थे। ऐसे इतिहास के पन्नों पर अनगिनत दृष्टान्त अंकित हैं। पिछली दो शताब्दियों में भी ऐसे अनेकों महापुरुष हुए हैं, जिन्होंने अपनी भारत माता के स्वाधीनता संग्राम में अनूठे बलिदान दिए, ताकि आने वाली पीढ़ियां सुख-समृद्धि से स्वतन्त्र जीवन जी सकें- फिर वह झाँसी की महारानी लक्ष्मीबाई हो, चाफ़ेकर बन्धुओं का बलिदान हो, वीर दामोदर सावरकर, सरदार भगतसिंह, चन्द्रशेखर आज़ाद, सुभाषचन्द्र बोस, महात्मा गाँधी, बाबा साहब भीमराव अम्बेडकर, डॉ॰ हेडगेवार, माधव सदाशिव गोलवलकर (श्रीगुरुजी) अन्य अनेक महापुरुषों ने समाज कल्याण के लिए बलिदान दिए और संघर्ष किए। परन्तु आज! कितने विरोधाभास! भ्रष्टाचार चरम पर, ग़रीबी, भुखमरी की पराकाष्ठा, एक तबका ज़रूरत से ज्यादा रईस और एक बड़ा वर्ग ऐसा है जो दो वक्त की रोटी भी नहीं जुटा पाता। करोड़ों बच्चे प्राईमरी से आगे पढ़ ही नहीं पाते। इनमें बहुत बड़ा वर्ग है, जिसने स्कूल का द्वार भी नहीं देखा। लाखों बच्चे ऐसे हैं, जिनका बचपन बन्धुवा श्रम करते बीतता है। आज भी नारी मीलों चलकर घास और लकड़ी बटोरने आती-जाती है। भ्रष्टाचार, मिलावट, मुनाफ़ाखोरी,

महंगाई, बेरोज़गारी निरन्तर बढ़ती जाती है। प्रकृति को विकृत किया जा रहा है। गंगा सहित देश की सब नदियों को प्रदूषित किया जा रहा है। जल के स्रोत कम होते चले जा रहे हैं। भू-मण्डल गर्म (ग्लोबल वार्मिंग) हो रहा है। हमारे देश का तथाकथित प्रबुद्ध वर्ग विशेष रूप से राजनीतिज्ञ खुलेआम भाई-भतीजावाद से लेकर भ्रष्ट आचरण करते देखे जाते हैं। फसलें जेनेटिक खाद के कारण विषैली होती जा रही हैं। भारतीय ऋषि-कृषि सिद्धान्तों की अवज्ञा होने के कारण किसान-अन्नदाता आत्महत्याएं कर रहे हैं। आतंकवाद, नक्सलवाद, माओवाद से देश त्रस्त है, फिर भी ऐसी सब स्थितियों से निराश होने की आवश्यकता नहीं, कुछ लोग आसमान में सुराख़ कर सकने में समर्थ हैं, तबीयत से पत्थर उछालने भर की ज़रूरत है और यह कार्य सेवा भारती के कार्यकर्त्ताओं को करना है। हमें फ़कीर कार्यकर्त्ताओं की फ़ौज खड़ी करनी होगी।

अपने देश भारत के तथाकथित विद्वान साहित्यकार, कलाकार, राजनैतिक नेता बड़े-बड़े लोकप्रिय अभिनेता, अधिकतर शिक्षित वर्ग भी इस भ्रम में फंसे हुए हैं, कि अपने देश की समस्याओं, कठिनाईयों, आपत्तियों, विपत्तियों के लिए सरकार और सरकारी तन्त्र ही ज़िम्मेवार है। अपने ऋषि-मुनि बार-बार समाज को सावधान करते रहे हैं-कि **सरकारी सत्ता से समाज नहीं बनते बदलते।** समाज का व्यक्ति ठीक न हो तो सत्ता भ्रष्ट करती है और सत्ता जनता को मूर्ख बनाकर त्रस्त करती है, ग़रीबों का व्यापार करती है। स्वतन्त्रता के 69 वर्षों के बाद भी सरकारी सत्ता ग़रीब, लाचार, बेहद पिछड़े, वंचितों को रोटी-कपड़ा और मकान का प्रबन्ध तथा बेघर परिवारों के बच्चों का बेहतर भविष्य सुनिश्चित करने की कोई प्रभावी व्यवस्था नहीं कर सकी। आज भी देश के करोड़ों बच्चे कूड़ा-कर्कट बीनते हैं। भवन निर्माण में ईंटें-गारा ढोते हैं, बस-स्टैंडों, रेलवे-स्टेशनों पर पानी की बोतलें बेचते हैं, राहगीरों के पैरों में पड़कर भीख माँगते हैं। अब प्रश्न यह है कि अपने देश के बच्चों की हैरान करने वाली मर्मस्पर्शी दुर्दशा का निवारण कैसे करें ? देश भर में झुग्गी-झोंपड़ी वासियों में, सेवा बस्तियों में, वनवासियों में, गिरि-कंदराओं में लाखों-लाख दरिद्र, अनपढ़, ग़रीबी से पीड़ित तिरस्कृत, उपेक्षित, अभावग्रस्त बन्धुओं में सेवा भारती के लाखों कार्यकर्त्ता उनके जीवन स्तर को ऊँचा उठाने और उन्हें देश की मुख्य धारा में लाने के लिए अनेक प्रकल्पों के माध्यम से सेवा कर रहे हैं। परन्तु उनके प्रयास, देश की भीषण समस्या के निवारण के लिए अभी बहुत कम हैं। सबसे पहले अपने कार्यकर्त्ताओं को उन अभावग्रस्त बन्धुओं के

अनुरूप अपने को ढालना होगा। सादा जीवन, सज्जनता, उच्च आचार-विचार अपनाकर, बनावट, फ़िज़ूल ख़र्ची, श्रृंगार, अनावश्यक ठाठ-बाट और व्यर्थ के प्रदर्शन और अहंकार से दूर रहना होगा।

आज की इस चकाचौंध की दुनिया में भी अमेरिका के 20 सबसे बड़े उद्योगपतियों और धनपतियों ने अपने जीवन की कमाई समाज को अर्पण करने का संकल्प लिया है, हमारे यहाँ तो लोकोक्ति है, कि पूत-सपूत तो का धन संचय, पूत-कपूत तो का धन संचय? दुनिया भर के बड़े दौलतमंदों में शुमार बिलगेट्स का अपनी दौलत, विरासत में अपने बच्चों को सौंपने का कोई इरादा नहीं है, क्योंकि वह मानते हैं, कि विरासत में दौलत सौंपने से न तो बच्चों का भला होगा और न ही समाज का। 60 वर्षीय बिलगेट्स की कुल अनुमानित सम्पत्ति 35 अरब पौंड है (करीब 25 खरब रुपये) इस धन का इस्तेमाल वह दुनिया से ग़रीबी और ग़रीबों की बीमारी मिटाने में लगाना चाहते हैं। उनकी 2 बेटियां जेनिफ़र (20) फ़ोब (14) और बेटा शोरी 17 साल का है। अब तक बिलगेट्स लगभग 13 खरब रुपये दान करके 25 करोड़ ग़रीब बच्चों की बीमारियों में सहायता कर चुके हैं। वर्तमान का युगधर्म है, कि समाज के साधन सम्पन्न प्रतिष्ठित महानुभावों को सेवा भारती के सेवादार फ़कीरों की फ़ौज में मिलकर जैसे श्रीराम शबरी के पास चलकर गए थे, उसी प्रकार भगवान श्रीकृष्ण (सम्पन्न वर्ग) को आज ग़रीब सुदामा (वंचित वर्ग) के पास जाकर इनकी ग़रीबी, अशिक्षा मिटाएं, ताकि समाज के अभाव-ग्रस्त पिछड़े बन्धु देश के उत्थान में स्वस्थ सहयोगी बन सकें। **अगले अंक में जारी...**

जीवन–मृत्यु?

मैंने पहले मेरे पिता जी द्वारा बताई गई जीवन-मृत्यु पर एक घटना सेवादर्शन में छापी थी, कि उनके पिता जी यानि मेरे दादा जी की लगभग 100 वर्ष पूर्व शनिवार के दिन दोपहर 12 बजे मृत्यु हो गई थी, उनको अर्थी पर लिटा दिया गया था। 3 घण्टे तक सभी क्रिया-प्रक्रिया करने के पश्चात् जैसे ही अर्थी उठाने लगे वह उठकर बैठ गये और कहने लगे अब मैं अगले शनिवार ठीक 12 बजे फिर से मर जाऊँगा, इत्यादि। अब पिछले जुलाई मास में मेरे स्वर्गीय पिता जी के स्वर्गीय मामा श्री लद्धाराम जी के सुपुत्र लगभग 68 वर्षीय श्री रमेश कुमार बरेजा सोनीपत निवासी का फ़ोन आया, जिसमें उन्होंने कहा-ओम जी! मैं परलोक सिधार गया था, परन्तु प्रभु कृपा से वापस लौट आया हूँ आकर मिल जाओ। उनका पूरा परिवार हमारे परिवार के साथ बहुत प्रेम रखता है। मैं सोनीपत उनके निवास स्थान पर 17.7.16 को उन्हें मिलने

गया। बड़े प्रेम से गले मिले। कहने लगे डेढ़ महीना पहले मुझे हृदय-आघात (heart attack) हुआ था। मुझे तुरन्त मेरे बच्चे मुझे अस्पताल ले गए। डाक्टरों ने मुझे विद्युत के झटके (electric shocks) दिए। दो डाक्टरों ने मेरे हृदय पर खूब दबाया, मेरी पस्लियां भी टूट गई। आखिर में 2 घण्टे बाद डाक्टरों ने जवाब दे दिया और लिखने वाले थे (Brought Dead) मरा हुआ लेकर आए। श्री रमेश कुमार जी बरेजा बोल पड़े-ओ डाक्टर साहब! मैं जिन्दा हूं। मैंने पूछा, इन दो घण्टों में क्या-क्या अनुभव प्राप्त किए? कहने लगे मैं एक जगह पहुँचा, जहाँ बहुत से लोग आ जा रहे थे, मुझे ऐसा लगा, कि जैसे सब कुछ स्वाचलित (automatic) है। सभी अपने-अपने कर्मों के अनुसार आ जा रहे हैं। कोई हिसाब-किताब रखने-लिखने वाला वहाँ नहीं था, हम सबको अपने कर्मों के अनुसार अपने-आप अगली योनियों में जाना है। मैंने पूछा इस प्रक्रिया पर कितना खर्च हो गया था? उन्होंने उत्तर दिया- तीन लाख। मैंने कहा, यह कोई कर्ज़ा था जो तुम्हें चुकाना था, वापिस आकर तुमने चुका दिया।

-सम्पादक

सेवा भारती यमुनानगर द्वारा "पौधारोपण"

23 जुलाई, 2016 को नगर सचिव श्री नवीन त्यागी एवं श्रीमती सुनीता त्यागी ने अपने सुपुत्र प्रिय गौरव त्यागी के जन्म दिन पर न्यू हमीदा लक्ष्मी सिनेमा के पीछे वाले पार्क में 20 औषधीय गुणों वाले पौधे लगवाये, जिनमें बहेड़ा, बेलपत्र, गुलाचीन, रात की रानी, बोटला, नीम, पीपल, तुलसी के पेड़ लगवाये। इस अवसर पर यमुनानगर के प्रसिद्ध डॉ॰ आजेश गोयल एवं डॉ॰ ममता गोयल डायरेक्टर J. P. Hospital ने आँवला वृक्ष लगाकर कहा, कि पेड़ों से पुत्रवत प्यार करना चाहिए, यह शुद्ध वातावरण एवं पर्यावरण की ओर एक सराहनीय कदम है। ऐसे वृक्षों का रोपण प्रदेश को जानी मानी संस्था H.E.S के संचालक ग्रीन मैन के नाम से प्रसिद्ध डॉ॰ एस॰ एल॰ सैनी ने किया। हमारा सौभाग्य है कि वे यमुनानगर वासी हैं। उन्हीं की प्रेरणा से हम प्रेरित हुये हैं। प्रिय गौरव की माता ने अपने सम्बोधन में कहा कि गौरव मेरी एक मात्र सन्तान थी, अब वह हमारे साथ नहीं है, उसके जन्मदिन पर पौधारोपण करते समय ऐसा लगता है कि इन वृक्षों के रूप में मेरा प्यारा गौरव सबके साथ खड़ा है और सभी उसको आशीर्वाद दे रहे हैं, इसे सुनकर सभी की आँखें नम हो गई। त्यागी दम्पत्ति के सम्बन्धीगण, सेवा भारती के सर्वश्री योगध्यान थरेजा नगर संरक्षक, घनश्याम दास जिंदल कार्यवाहक नगर अध्यक्ष, नवीन गौतम प्रचार प्रमुख, महेश नाँगिया संस्कार प्रमुख, एस॰पी॰ बख्शी कोषाध्यक्ष, मनमोहन वर्मा ज़िला उपाध्यक्ष व गणमान्य व्यक्ति शामिल हुए।

नया दायित्व सँभालने पर मुबारकबाद : श्री जितेन्द्र जी यमुनानगर के ज़िला प्रचारक सेवा भारती हरियाणा के प्रान्त संगठन मन्त्री का दायित्व सँभालने पर नगर सेवा भारती की तरफ से बहुत-2 मुबारकबाद।

18-7-2016 को पुराना हमीदा में बाल्मिकी मन्दिर के बाल संस्कार केन्द्रों पर 'बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ' से प्रेरित होकर विजय गार्मेन्ट न्यू मार्किट यमुनानगर ने बच्चों को नये सूट व नये वस्त्र भेंट किए। नगर सेवा भारती हमेशा उनकी आभारी रहेगी और आशा करते हैं कि भविष्य में हमें इसी प्रकार से अपना सहयोग व स्नेह देते रहेंगे। इस अवसर पर श्री योगध्यान थरेजा नगर संरक्षक, श्री घनश्याम दास जिन्दल कार्यवाहक नगर अध्यक्ष, श्री नवीन गौतम प्रचार प्रमुख व गणमान्य व्यक्ति शामिल हुए। **-घनश्याम दास जिन्दल**

15वीं किस्त- आपात्काल में एक स्वयंसेवक का संघर्ष

15-1-76 को हम तीनों ओमप्रकाश अत्रेजा, श्री गुलशन भाटिया, श्री राजेन्द्र वर्मा एडवोकेट, 17 सैक्टर, चण्डीगढ़ के पुलिस स्टेशन में थे। प्रातः जागते ही S.H.O. ने मुझे बुलाकर कहा- देखो मिस्टर अत्रेजा! तुम कल से इस थाने में हो, हमने तुम्हें कोई तकलीफ़ तो नहीं दी, अब हमारी एक request है, जब तक हम तुम्हें कचहरी में पेश न कर दें, तुम इन्दिरा गांधी के खिलाफ़ नारे नहीं लगाओगे। मैंने कहा, जिस काम को करने की ज़िम्मेवारी हमें सौंपी गई है, हम वो ही न करें, ये कैसे चलेगा? तुम्हारे मर्ज़ी है, S.H.O. ने कहा, फिर हमें तुम्हारा remand लेना पड़ेगा। मैंने कहा देखते हैं, और अपने साथियों के पास लौट आया। इसी समय श्री पुरुषोत्तम देशमुख S.H.O. की स्वीकृति से चाय नाश्ता लेकर आये। उन्होंने आते ही कहा, कि नारे नहीं लगाने, न यहाँ थाने में, न कचहरी में, इसलिए कि न्यायधीश नाराज़ न हो जाये। क्योंकि आज तीन कार्यकर्ताओं की ज़मानत होनी है, मैंने कहा चलो ठीक है, यहां भी बच गये। चाय नाश्ता के बाद हमें सूचना मिली, कि तैयार हो जाओ, कचहरी में तुम्हें पेश करना है। 17 सैक्टर के पास ही कचहरी है, लगभग 11 बजे चार सिपाही हमें कचहरी में ले गये, इतने में जिनकी ज़मानत होनी थी, वे तीन कार्यकर्ता भी बुढ़ैल जेल से आ गये। पहले उन्हें पेश किया गया और उनकी ज़मानत हो गई। लगभग 12 बजे हमें भी पेश किया गया, देखिए कुदरत का करिश्मा-जिस C.J.M. श्री एस.एस. नागरा की अदालत में हमें पेश किया गया अपना जानकार निकला। जब मैं कॉलेज मं पढ़ता था, शायद 1959 में श्री एम.एस.नागरा को दयाल सिंह कॉलेज के छात्रसंघ (student union) का अध्यक्ष

निर्वाचित करवाया था। जब हमें पेश किया गया, उसके चेहरे पर मुस्कुराहट दिखाई दी, शायद वो मुझे पहचान गया था और तुरन्त हमें फ़ारिग कर दिया। हम तीनों को बुढ़ैल जेल भेज दिया गया। जैसे ही हम जेल में पहुँचे, वहाँ पहले से ही 30-35 आपात्काल के कैदियों ने भारत माता की जय-जयकार से हमारा स्वागत किया।

जेलर ने कैदियों के लिए अलग एक बड़ी बैरक सुरक्षित कर रखी थी, जहाँ आपात्काल के D.I.R. तथा MISA के कैदी इक्ट्ठे रहते थे। एक बड़ा कक्ष था, उसमें सीमेंट की थड़ियां बनी हुई थी (जैसे शमशान में घड़ाभन की थड़ी होती है) संख्या अधिक थी, थडियां कम थीं, इसलिए दो थड़ियों की बीच की जगह में भी कार्यकर्ता सोते थे। मुझे ठीक से याद नहीं 8-10 कैदी पंजाब से अकाली दल के थे, 20-25 संघ और जनसंघ के कार्यकर्ता थे, शेष 3-4 अन्य पार्टियों से थे। इन सबमें आनन्ददायक बात यह थी, कि इन सब कैदियों में मा. सर्वश्री दलीपचंद जी गुप्त उत्तरक्षेत्र के माननीय संघचालक, जितेन्द्रवीर जी गुप्त उत्तरक्षेत्र के कार्यवाह, श्रीचन्द जी गोयल, एम.पी. सतपाल जी जैन, प्रेम सागर जैन, ओमप्रकाश आहूजा, विजय जी, श्रीमान् कृष्ण जी बवेजा प्रचारक, श्री देशराज जी टण्डन, जालंधर से कविवर श्री सुदर्शन जी चौहान, अकालियों के बाद में 1-2 पंजाब सरकार में मन्त्री भी बनें। इन सबके बीच में रहकर बहुत कुछ सीखने को मिला। इनमें से अधिकतर स्वर्ग चुके हैं। भोजन का समय था, इस समय मेरे दिमाग़ में एक अन्य घटना कुलबुला रही है, उसे लिखता हूँ :

बात बहुत पुरानी है, आर्यसमाज का सम्मेलन था, एक उपदेशक महाश्य कुंवर सुखलाल जी बहुत प्रेरणादायी देशभक्ति के गीत सुनाते हुए बीच-बीच में कुछ दृष्टांत भी सुनाते जाते थे। उन्होंने अपने जीवन का भी एक बहुत ही अनुपम उदाहरण सुनाया। कुंवर सुखलाल एक स्वतंत्रता सेनानी भी थे, अंग्रेज़ों की जेलों की यात्रा भी कर चुके थे।, देश विभाजन के पश्चात् वह पश्चिमी पंजाब से भारत में आ गए थे। उन्होंने बताया, देश की आज़ादी के बाद उन्हें उस समय की सरकार की ओर से एक पत्र मिला, जिसमें उनसे स्वतन्त्रता संग्राम में अंग्रेज़ी सरकार के कारागार में बिताए समय का ब्यौरा माँगा गया था। आगे लिखा था कि-उसी के अनुसार उन्हें जीवन की कुछ सुविधाएँ प्रदान की जाएँगी। उस समय हज़ारों लागों ने सच्चे-झूठे ब्यौरे देकर खूब लाभ उठाए थे। कुंवर सुखलाल जी ने बताया, कि उन्होंने उसी चिट्ठी

के पीछे यह लिखकर कि, 'जो अपनी माता की सेवा के बदले कुछ प्राप्त करने की इच्छा पालता है, वह कुत्ते से भी घटिया प्राणी होता है। मैंने भारत माता की सेवा किसी स्वार्थ साधना के लिए नहीं की थी।' उसी पत्र को वापस सरकार को भेज दिया। उसके आगे भारत माता की प्रेरणादायिक स्तुति गाते हुए उन्होंने अपना उपदेश समाप्त किया था। इस उपदेश ने मेरे जीवन पर गहरा प्रभाव डाला। एक ओर संघ शाखा के संस्कार, दूसरे समय-समय पर ऐसे उपदेशकों के बौद्धिक सुन-सुनकर मेरे अन्तःकरण में भावनाएँ हिलौरे लेती रहती थी, कि कभी जीवन में ऐसी स्थिति आई तो क्या मैं उस समय परीक्षा की घड़ी में पास हूँगा? और ऐसा समय जीवन में आया। वैसे तो राजनैतिक कारणों से मैंने सात बार जेल की यात्रा की, पहली बार 1966 में गौरक्षा आन्दोलन में सत्याग्रह करके दिल्ली की तिहाड़ जेल में रहा। आपात्काल के बाद केन्द्र में और हरियाणा प्रदेश में सत्ता परिवर्तन हुआ। पहले केन्द्र में और फिर हरियाणा में जनता राज आया। पहले D.I.R. में चण्डीगढ़ बुढ़ैल जेल में बाद में मीसा (MISA) में करनाल जेल में मैं डॉ. मंगल सैन जी के साथ रह चुका था, वह जनता राज में गृहमन्त्री और उद्योग मन्त्री थे। उन्हें मन्त्री पद की शपथ लिए हुए थोड़े ही दिन बीते थे, कि एक दिन दोपहर के समय करनाल ज़िला उद्योग कार्यालय का एक क्लर्क मेरी प्रिंटिंग प्रैस पर मेरे पास आया, उसने कहा कि ज़िला इण्डस्ट्री ऑफ़िसर ने सायं 7.30 बजे अपने निवास स्थान पर ओम प्रकाश अत्रेजा को बुलाया है और उन्होंने कहा है, कि रात्रि-भोजन मैं उनके साथ करूँ। मैं ठीक समय पर उनके घर ऑफ़िसर कॉलोनी, करनाल में पहुँच गया। वह अधिकारी एक नौजवान व्यक्ति था (उसकी एक अलग से बड़ी रोचक विचित्र कहानी है) उन्होंने अन्य औपचारिकताओं के बाद कहा कि मेरे पास कुछ कोटे-परमट देने के अधिकार हैं। मैं आपके लिए 20-25 हज़ार रुपए महीने की आय का जुगाड़ बना सकता हूँ, आपको एक फार्म भर कर देना होगा। मैंने कहा कि मैं संघ का स्वयंसेवक हूँ मैंने अपना कर्त्तव्य निभाया है, मैंने उसी समय साफ़ इन्कार कर दिया और चाय पीकर लौट आया। जीवन में ऐसे और भी अनेक अवसर आए परन्तु प्रभु ने लाज रखी, किसी लालच में नहीं फंसा। आगे भी सर्वशक्तिमान परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है, कि ऐसे ही जीवन के अन्तिम क्षणों तक संघ स्वयंसेवक के नाते कर्त्तव्यों का पालन करते हुए जीवन का बचा हुआ समय व्यतीत हो। **जारी.**

....

सेवा दर्शन से प्रभु पूजा द्विमासिक पत्रिका, स्वामित्व- सेवा भारती (पंजी.) हरियाणा।
मुद्रक : जुगल बठला, मै. बठला प्रिंटर्ज़, विवेकानन्द विद्यालय परिसर, करनाल।
सम्पादक व प्रकाशक : ओम प्रकाश अत्रेजा, ई. 230, अर्जुन गेट, करनाल-132001